दिनांक 28/04/2020

हिन्दी विभाग
स्नातक तृतीय (III)
पत्र संख्या :- VIII

बेनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)

प्र० – भारत-दुर्दशा : सम्पूर्ण अवलोकन

उत्तर :- भारतेन्दु द्वारा रचित भारत-दुर्दशा का सम्पूर्ण अवलोकन करने के लिए पहले नाटक के सभी अंकों पर विचार करलेना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि कथा आरंभ और अंत को लेकर नाटक सफल रहा है कि नहीं।

प्रथम अंक अंक का प्रारंभ होते ही मंच पर एक योगी विद्यार्थी दिखाई देता है जो सम्भवतः देशाटन पर निकला हुआ, कोई पहुँचा हुआ साधु है देश की दुर्दशा को। चूंकि वह अपनी आँखों से देख चुका है इसलिए वह करुणा भरे गीत में भारत के प्रति व्याकुलता, संवेदना भरी हुई है। लावणी तर्ज में गाते हुए वह भारत के विगत वैभव, उसकी सुख समृद्धि पौरुष और हीनता का विरह गान करने के उपरांत भारत की वर्तमान दुर्दशा पर गालबहुत बहाता हुआ है। वर्तमान समय में जिन दुःखद परिस्थितियों में भारत को घेरा है जिनके कारण इसका पतन हुआ है और पराधीन हुआ है। उनके विषय में बताते हुए वह कहता है कि पारस्परिक फूट, द्वेषभाव, ऊँच-नीच एवं अज्ञान आदि इस पतन के मुख्य कारण है। उनके विषय अंग्रेजी शासन में यद्यपि बहुत सारे सुख साधन उपलब्ध है किन्तु आर्थिक दृष्टि से उन्होंने देश को इतना जर्जर कर दिया है कि अब अपने पाँवों पर खड़ा होना उसके लिए कठिन हो गया है। एक तरफ विदेशी सामानों का आयात करके सारा धन इंग्लैण्ड पहुँच गया है और दूसरी ओर महंगाई तथा टैक्स

आदि के द्वारा देश की आर्थिक व्यवस्था को ही चरमरा दिया है। इन परिस्थितियों के वर्णन के साथ ही नाटक का प्रथम अंक समाप्त होता है।

भारत एक पुरुष पात्र के रूप में मंच पर उपस्थित होता है। उसका मुख मलीन है तथा वेश जीर्ण-शीर्ण है जिससे उसकी दशा का परिज्ञान हो जाता है। पश्चाताप युक्त उसकी वाणी में करुण मार्मिकता है। उसे अपने वैभवशाली अतीत के साथ-साथ महाभारत के दुर्धर्ष वीरों का स्मरण हो जाता है। निर्लज्जता और आशा के हाथों में पड़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत मरा नहीं है। निर्लज्जता और आशान्वित होकर जी रहा है।

भारत के साथ सम्मेलन एक पुस्तकालय में देश की स्थिति पर विचार करने हेतु बातें ओ दिखाई देती है। एक सभापति, एक बंगाली, एक कवि, एक मराठी और दो देशी हैं। बंगाली ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करने की बात कहता है। उसका कहना है कि आगे से स्वेज नहर को पाट दिया जाए तथा बीस की नली में धूल फेंक कर अंग्रेजों की आँखों में डाली जाए, जिससे भयभीत होकर वे भारत छोड़कर भाग खड़े होंगे। कवि का कहना है कि एक लम्बी कनात तानकर अंग्रेजों से कहा जाए कि उधर स्त्रियाँ है इसलिए

वे इधर न आएँ।

भारत भाग्य मंच पर आता है और भारत को अचेत पड़ा देखकर अपनी मित्रता का प्रदर्शन करते हुए उसे चैतन्य करने का निरर्थक प्रयास करता है। जब दो-तीन बार उठाने पर भी वह नहीं जागता है तो अपने मित्र को विगत वैभवशाली दिनों को स्मरण करके पश्चाताप करता है। वह भारत के ज्ञान, वैभव, इसकी संस्कृति, नगर, नदी, हिमालय, राम युधिष्ठिर, कृष्ण, अर्जुन, कर्ण, भीम, रति, देव, शिव आदि महापुरुषों के साथ ही बुद्धदेव का स्मरण करता है तथा शुक्राचार्य, व्यास, गार्गी एवं धन्वन्तरि, चरक, सुश्रुत जैसे पंडितों को याद करते हैं। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास का वर्णन करने के उपरान्त जब वह देखता है कि उसका परम मित्र भारत फिर भी चैतन्य नहीं हुआ तो वह आत्मग्लानी आँसू बहाते हुए अपने जीवित रहने को धिक्कार कहता है और अपने अचेत मित्र भारत से अंतिम बार गले लगकर प्रायश्चित स्वरूप अपनी छाती में कटार भोंककर आत्म घात कर लेता है। दुर्भाग्य का मारा भारत वहीं पर अचेतावस्था में पड़ा रह जाता है।

इस प्रकार कथा का अंत विषादपूर्ण स्थितियों में होता है। भारत भाग्य आत्म-हत्या

कर लेता है और परोक्षतः भारत दुर्दैव की विजय होती है। किन्तु मरते समय भारत भाग्य का यह कहना है कि उसका पुनः गंगा-जमुना के तट पर पुनर्जन्म होगा। इस आशा को बल प्रदान करता है कि आज दुर्दैव की विजय अवश्य हुई है। किन्तु कि-न-कि दिन भारत की विजय अवश्य होगी क्योंकि तब भारत भाग्य प्रबल होगा।

दिनांक
28/08/2020

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय
हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० - 8292271041
ईमेल - benamkumar13@gmail.com